पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

स्वामी आत्मानन्द पीठ

स्थापना प्रस्ताव

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर में 'स्वामी आत्मानन्द पीठ' का स्थापना प्रस्ताव निम्नांकित उप–शीर्षकों के अनुसार प्रस्तावित है :–

1. प्रस्तावना :–

अ. पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ : एक दृष्टि में –

पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, की स्थापना बिलासपुर में दिनांक 20 जनवरी 2005 को हुई। 'सा विद्या या विमुक्तये' की सूक्ति को चरितार्थ करते हुए 'स्वाध्यायः परमं तपः' को अक्षरशः मूर्तिमान करते हुए यह विश्वविद्यालय मुक्त शिक्षा पद्धति से छत्तीसगढ़ के मानव संसाधन को उच्च शिक्षा के माध्यम से समृद्ध एवं समुन्नत कर रहा है। छत्तीसगढ़ प्रदेश के सुदूरवर्ती ग्रामीण अंचल एवं वनांचल में उच्च शिक्षा का प्रचार–प्रसार करते हुए तथा 'उच्च शिक्षा आपके द्वार' का आह्वान करते हुए यह विश्वविद्यालय अहर्निश छत्तीसगढ़ की जनता की सेवा में तत्पर है। सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में 136 अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा पद्धति की संकल्पना को साकार करते हुए यह विश्वविद्यालय अपनी समस्त सम्भावनाओं को वास्तविकता में परिणत कर रहा है। यह विभिन्न पाठ्यक्रमों एवं शोध कार्यों के माध्यम से अकादमिक विस्तार में तत्पर है। सम्प्रति, विश्वविद्यालय में अनेक पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक एवं गुणवत्तापूर्वक संचालित किये जा रहे हैं यथा – बी.लिब एवं आई.एस–सी., एम.ए. : संस्कृत, हिन्दी, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, अंग्रेजी, समाज कार्य, शिक्षा,: एम.एस–सी. (गणित), एम. काम., पी.जी. डिप्लोमा इन यौगिक साइन्स, पी.जी. डिप्लोमा इन साइकोलाजिकल गाइडेंस एण्ड काउंसलिंग, छत्तीसगढ़ी भाषा एवं साहित्य में पी.जी. डिप्लोमा, पी.जी.डिप्लोमा इन लेबर लॉ एण्ड लेबर वेलफेयर, आरम्भिक भाषा शिक्षण में डिप्लोमा, पत्रकारिता आदि विषयों में शिक्षण एवं शोध कार्य गुणवत्तापूर्वक किया जा रहा है। विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा के

माध्यम से विविध पाठ्यक्रमों को संचालित कर रहा है। अपनी स्थापना के अल्पसमय में ही यह विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में 'नवीन' कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

उल्लेखनीय है कि विश्वविद्यालय में मुख्य मार्ग स्वामी आत्मानन्द के नाम पर है तथा स्वामी रामकृष्ण परमहंस की भावधारा को छत्तीसगढ़ में अविरल प्रवाहित करने वाले स्वामी विवेकानन्द के नाम पर विश्वविद्यालय ग्रन्थालय है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा विभिन्न विश्वविद्यालयों में विभिन्न महापुरूषों के नाम पर शोध पीठों की स्थापना की गई है। इसी अनुक्रम में छत्तीसगढ़ की अमर विभूति स्वामी आत्मानन्द जी नाम पर **'स्वामी आत्मानन्द पीठ'** प्रस्तावित है।

ब. स्वामी आत्मानन्द का जीवन–परिचय :–

स्वामी आत्मानन्द का जन्म 6 अक्टूबर 1929 को रायपुर जिले के बरबन्दा गाँव में हुआ था। आपके पिता श्री धनीराम वर्मा पास के विद्यालय में शिक्षक थे एवं माताजी श्रीमती भाग्यवती गृहणी थीं। पिता जी के साथ महात्मा गाँधी के वर्धा आश्रम में रहते परिवार के साथ ही बालक तुलेन्द्र को महात्मा गाँधी का सानिध्य प्राप्त हुआ। बालक तुलेन्द्र गीत व भजन कर्णप्रिय स्वर में गाते थे जिसके कारण गाँधी जी उन्हें बहुत स्नेह करते थे। गाँधी जी बालक तुलेन्द्र को अपने पास बैठाकर गीत सुनते थे। धीरे–धीरे बालक तुलेन्द्र को गाँधी जी का विशेष स्नेह प्राप्त हो गया । गाँधी जी बालक तुलेन्द्र के साथ वर्धा आश्रम में घूमते थे तब तुलेन्द्र उनकी लाठी उठाकर आगे–आगे दौड़ते थे और गाँधी जी पीछे–पीछे लम्बे डग भरते अपने चिर परिचित अंदाज में चलते थे। गाँधी जी के साथ बालक तुलेन्द्र का इस भाव धारा का एक चित्र बहुत ही मार्मिक एवं प्रसिद्ध है।

अपने शैक्षिक जीवन में बालक तुलेन्द्र ने सेन्टपाल स्कूल से हाईस्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान के साथ पास की और इस उपलब्धि के कारण स्वर्णपदक के अधिकारी हुए। इसके बाद उच्च शिक्षा के लिए साइन्स कॉलेज नागपुर चले गये। नागपुर से विद्यार्थी तुलेन्द्र ने गणित विषय में परास्नातक उपाधि प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किये। इस अध्ययन के दौरान विद्यार्थी तुलेन्द्र रामकृष्ण आश्रम में रहने लगे। यहीं से उनके जीवन में स्वामी विवेकानन्द के जीवन आदर्शों की विवेक ज्योति प्रज्जवलित हुई। मित्रों की सलाह से वे आई.ए.एस. परीक्षा प्रावीण्य सूची में प्रथम दस उम्मीदवारों के रूप में उत्तीर्ण किये किन्तु अपने आध्यात्मिक स्वभाव, मानवता सेवा अनुराग के कारण

साक्षात्कार में शामिल नहीं हुए। वे रामकृष्ण आश्रम की विचारधारा से जुड़कर कठिन साधना एवं स्वाध्याय में रम गये।

सन् 1957 में रामकृष्ण मिशन के महाध्यक्ष स्वामी शंकरानन्द ने तुलेन्द्र की प्रतिभा, विलक्षणता, सेवा व समर्पण से प्रभावित होकर ब्रह्मचर्य में दीक्षित किया और उन्हें नया नाम दिया – ब्रह्मचारी तेज चैतन्य। ऋषिकेश में हिमालय स्थित वशिष्ठ गुफा से तपस्या करने के उपरान्त स्वामी विवेकानन्द के योगदान को अविस्मरणीय बनाने के लिए विवेकानन्द आश्रम का निर्माण कार्य प्रारंभ कर दिया। आश्रम निर्माण के साथ ही इस आश्रम को वेलूरमठ से सम्बद्धता भी प्राप्त हो गई। आज हम जिस विवेकानन्द आश्रम का विराट स्वरूप देख रहे हैं, वह पूर्व में ब्रह्मचारी तेज चैतन्य के नाम से आख्यात विश्वविख्यात स्वामी आत्मानन्द की कर्मनिष्ठा, लगन एवं त्याग का जीवन्त प्रतिमान है। ब्रह्मचारी तेज चैतन्य बाद स्वामी आत्मानन्द के रूप में विख्यात हुए। स्वामी आत्मानन्द छत्तीसगढ़ की सेवा में इस तरह से समर्पित हो गये कि मन्दिर निर्माण हेतु प्राप्त धनराशि को अकाल पीड़ितों में बाँट दिये। शासन के अनुरोध पर वनवासियों के उत्थान के लिए नारायणपुर में उच्च स्तरीय शिक्षा संस्कार केन्द्र की स्थापना भी स्वामी आत्मानन्द द्वारा की गई। इसके साथ ही स्वामी आत्मानन्द छत्तीसगढ़ के जन–मन में रच–बस गये। दुर्भाग्यवश इस युवा सन्त का 27 अगस्त 1989 को राजनांदगाँव में सड़क दुर्घटना में स्वर्गवास हो गया और आपका यश अमर हो गया । ऐसे विद्वत मनीषी, विद्वान आचार्य के नाम पर पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर में **'स्वामी आत्मानन्द पीठ'** की स्थापना उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

2. **पीठ का सृजन :–**

छत्तीसगढ़ के दिव्य विभूति स्वामी आत्मानन्द की पावन स्मृति को चिरंजीवी, कालजयी बनाने के लिए **''स्वामी आत्मानन्द पीठ''** प्रस्तावित है :–

3. **'स्वामी आत्मानन्द पीठ' का कार्य–क्षेत्र :–**

पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर के अन्तर्गत स्थापित प्रस्तावित पीठ का कार्य क्षेत्र मुख्यतः इस प्रकार होगा :–

अ. शिक्षण–प्रशिक्षण, शोध, नवाचार आदि के माध्यम से स्वामी आत्मानंद जी के विचार एवं कार्यों को और बढ़ाना।

ब. समाज का आध्यात्मिक उन्नयन के कार्य।

स. समग्र समाज–कल्याण कार्य।

द. शिक्षा, संस्कृति तथा समाज के पिछड़े वर्गों के विकास हेतु बौद्धिक कार्य।

य. आदिवासी–वनवासी कल्याण कार्यक्रम।

र. अन्य प्रस्तावित समकालीन प्रासंगिक कार्य।

ल. प्रकाशन, कार्य, संगोष्ठी, अधिवेशन, कार्यशाला आदि का आयोजन ।